



# राष्ट्रपति ने 2021 के पद्म पुरस्कार प्रदान किए

राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद ने आज राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में प्रमुख हस्तियों को वर्ष 2021 के पद्म पुरस्कारों से सम्मानित किया। इस वर्ष की सूची में सात पद्म विभूषण, दस पद्मभूषण और 102 पद्मश्री पुरस्कार शामिल हैं। ये प्रतिष्ठित पुरस्कार दो चरणों में सुबह और शाम को प्रदान किए गए।

मूर्तिकार सुदर्शन साहू और पुरातत्वविद् प्रोफेसर ब्रजबासी लाल को पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। पार्श्व गायक एस. पी. बाला सुब्रह्मण्यम, भारतीय अमरीकी वैज्ञानिक डॉक्टर नरिंदर सिंह कपानी और विश्व प्रसिद्ध इस्लामी विद्वान और गांधीवादी मौलाना वाहिदुद्दीन खान को मरणोपरांत पद्म विभूषण सम्मान प्रदान किया गया।

असम के पूर्व मुख्यमंत्री तरुण गोगोई, पूर्व केन्द्रीय मंत्री रामविलास पासवान और गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री केशु भाई पटेल को मरणोपरांत पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।



पद्म भूषण पाने वालों में पूर्व लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन, सेवानिवृत्त लोकसेवक नृपेन्द्र मिश्रा और प्रख्यात कन्नड़ लेखक डॉक्टर चन्द्रशेखर बी. काम्बर और सिख नेता सरदार तरलोचन सिंह को जनसेवा के लिए पद्म भूषण सम्मान दिया गया।

छह बार राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता कर्नाटक संगीत और पार्श्व गायिका कृष्णन नायर शांता कुमारी चित्रा और इस्लामिक विद्वान तथा समाज सुधारक डॉक्टर सईद कल्बे सादिक को मरणोपरांत पद्म भूषण पुरस्कार दिया गया।

पद्मश्री सम्मान पाने वालों में सामाजिक कार्यकर्ता लखिमी बरुआ, लोक संगीतकार गोपीराम बरगायन बूढ़ाभक्त, कलाकार दुलारी देवी और अस्थिर रोग विशेषज्ञ डॉक्टर बी. के. एस. संजय शामिल हैं।

इसके अलावा अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भील चित्रकार भूरी बाई, टेबल टेनिस खिलाड़ी मौमा दास और पहलवान वीरेन्द्र सिंह को भी पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। गोवा की पूर्व राज्यपाल मृदुला सिन्हा को मरणोपरांत यह सम्मान दिया गया।

राष्ट्रपति ने कल 2020 के लिए पद्म पुरस्कार प्रदान किए थे। देश के प्रतिष्ठित नागरिक सम्मान, पद्म पुरस्कार तीन श्रेणियों में प्रदान किए जाते हैं — पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्मश्री। ये पुरस्कार कला, समाज सेवा, विज्ञान, व्यापार, चिकित्सा, साहित्य, खेल और नागरिक सेवाओं सहित विभिन्न विषयों और क्षेत्रों में विशेष योगदान के लिए दिये जाते हैं।

—एजेंसी

## Ali Aadil Khan - Editor's Desk



# अयोध्या में दीपोत्सव और कब्रस्तान के लिए पैसा

वैसे तो कब्रस्तान और शमशान हर इंसान को हमेशा याद रखना ही चाहिए, मौत ऐसी कड़वी सच्चाई है की इससे किसी जीव को भी इंकार नहीं, मौत को याद रखने से गुनाहों से बचने में मदद मिलती है। लेकिन जब चुनाव में कब्रस्तान राजनेताओं को याद आता है तो इसका मतलब आपको समझ लेना चाहिए, और हम भी कुछ कुछ समझने की कोशिश कर रहे हैं, जैसे...

कोरोना काल में शमशान और कब्रस्तान का जिक्र जाइज था क्योंकि लाशों को कुत्ते नोच रहे थे ऐसे में उनके क्रियाकर्म का माकूल इंतजाम करना सरकारों और राजनेताओं की जिम्मेदारी थी, मगर सरकारें अपनी जिम्मेदारियों को ढंग से या बेढंगे तरीके से भी निभा नहीं पाई, लेकिन उस दौरान जनता आत्म निर्भर दिखाई सी दे रही रही थी और जनता तो जनता उस वक्त तो लाशें भी आत्मनिर्भर लगने लगी थीं और अपना क्रियाकर्म स्वयं ही कर रही थीं। शुरु है रब का की वो दौर भी गुजर गया, मगर न तो जनता ने और न ही सरकारों ने उन हालात से कोई सबक लिया।

दीपावली के पावन अवसर पर भारत के सबसे विशाल प्रदेश के मुख्यमंत्री को कब्रस्तान याद आजाये तो इसको आप क्या कहेंगे? आप ही बताएं। शमशान और कब्रस्तान सीख लेने का मकाम और मौका होता है लेकिन हमारी सियासत यहाँ से भी वोट लेना चाहती है। दरअसल अयोध्या कई मानों में बहुत अहम् मकाम माना जाता है, लेकिन आज अयोध्या की चर्चा इसलिए हो रही है की यहाँ 9 लाख दिए जलाकर दीपोत्सव मनाया गया, अच्छी बात है मनाया जाना चाहिए क्योंकि अयोध्या नगरी का दीपों से सीधा रिश्ता है। अगर

इन दीपों में करुणा, आस्था, आध्यात्म, स्नेह, त्याग, तपस्या, ईश्वरवाद या मानवता और सद्भाव का तेल है तो धार खुद दिख जायेगी वरना दीवाली तो हर वर्ष आती ही है मगर हमारे अंदर का रावण नहीं मरता, और दीवाली मनाली जाती है। ऐसा ही कुछ हज के मौके पर मुसलमान भी करते हैं शैतान को कंकड़ियां मारकर फरीजा तो पूरा कर आते हैं मगर फिर खुद शैतान बन जाते हैं।

मुख्यमंत्री का दीवाली के अवसर पर कब्रस्तान का जिक्र करना कितना उचित था हो सके तो आप बताएगा। मुख्यमंत्री का इस अवसर पर Free Ration चुनावी उपहार तो किसी हद तक सही हैं मगर इसमें भी चूक कर गए चूँकि उनके पथप्रदर्शक तो फ्री राशन की योजना को नवंबर के अंत में खत्म कर देंगे, और उनके अनुगामी फ्री राशन को और शिद्वत के साथ मार्च तक खींचकर ले जायेंगे ताकि उपहार के साथ वोट का डिमांड ड्राफ्ट भी साथ रख दिया जाए जिससे अगली दीवाली भी मुख्यमंत्री के रूप में ही मनाई जाए।

मुख्यमंत्री के घोषणाओं में 40 लाख अंत्योदय कार्ड धारकों को 5 लाख का बीमा देने के लिए मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना से जोड़ा जाना भी शामिल था अंत्योदय अन्न योजना में राज्य के अंदर Targeted Public Distribution System के तहत कवर किए गए गरीबी रेखा से नीचे के परिवारों में से एक करोड़ गरीब परिवारों की पहचान करने और उन्हें 2 रुपये प्रति किलोग्राम गेहूं और 3 रुपये प्रति किलोग्राम चावल की अत्यधिक राजसहायता प्राप्त दरों पर खाद्यान्न प्रदान करने की परिकल्पना की गई है वैसे परिकल्पना का पर्यायवाची सट्टेबाजी भी होता है ध्यान रखें। केंद्र सरकार में खाद्य एवं उपभोक्ता सचिव ने जानकारी दी है की सरकार फ्री राशन की

योजना को समाप्त करने जा रही है, 30 Nov के बाद इसको बंद कर दिया जाएगा, यह फैसला इसलिए लिया गया है की देश की आर्थिक वयवस्था पटरी पर लौट रही है। देश में अर्थ व्यवस्था किसकी पटरी पर लौटी है इसका खुलासा नहीं किया गया है।

हालाँकि भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के पूर्व गवर्नर रघुराम राजन ने कहा कि देश के आर्थिक भविष्य में भारतीयों का भरोसा हाल के वर्षों में कम हुआ है। उन्होंने कहा कि मध्यम वर्ग के बहुत से परिवार गरीबी में चले गए हैं। राजन ने NALSAR यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ के एक कार्यक्रम को वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए संबोधित करते हुए कहा कि घरेलू शेयर बाजार तेजी से बढ़ रहा है, लेकिन यह इस वास्तविकता को नहीं दर्शाता है कि बहुत से भारतीय गहरे संकट में हैं।

उन्होंने कहा, “देश की भविष्य में आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में हमारा विश्वास कम हो गया है, महामारी के आंकड़ों ने हमारे आत्मविश्वास को और भी कम कर दिया है।” आरबीआई ने चालू वित्त वर्ष के लिए वृद्धि अनुमान को 10.5 प्रतिशत से घटाकर 9.5 प्रतिशत कर दिया है, जबकि आईएमएफ ने 2021 में 9.5 प्रतिशत और इसके अगले साल 8.5 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान लगाया है।

राजन ने कहा कि आर्थिक कार्यक्रमों का जोर अच्छी नौकरियां पैदा करने पर होना चाहिए, उन्होंने कहा, “जैसे-जैसे हमारा आर्थिक प्रदर्शन घट रहा रहा है, हमारी लोकतांत्रिक साख. आर्थिक मुद्दों पर बहस करने की इच्छा, मतभेदों का सम्मान और सहन करने की शक्ति भी प्रभावित हो रही है।” उन्होंने भारत के अंतरराष्ट्रीय व्यापार समझौतों में शामिल होने की जरूरत पर भी जोर दिया. वर्तमान

में शिकागो विश्वविद्यालय के बूथ स्कूल ऑफ बिजनेस में प्रोफेसर राजन ने कहा कि ऐसी वृद्धि और विकास जो सभी देशवासियों को साथ लेकर नहीं चलती है, वह टिकाऊ नहीं है।

आर्थिक मंदी और देश में विकास के सिलसिले में हमारा मानना है की मुसलमान करोड़ों लागत की आलिशान मस्जिदों की जगह हर Colony में अच्छा स्कूल और एक हेल्थ सेंटर खोलें और हमारे हिन्दू भाई भी ऐसा ही कुछ करें।

और सरकारों से हमारा निवेदन है की 300 और 250 मीटर ऊंची मूर्तियों और भव्य मंदिरों में पैसा लगाने की जगह देश की 40 से 50 करोड़ गरीब जनता के जीवन यापन के लिए स्थाई प्रबंध करने की योजना बनायें न की फ्री राशन देकर उनको हमेशा गुलाम बनाये रखने की.हालाँकि आपातकाल में जनता के माकन रोटी और कपड़े का इंतजाम करना यह सरकार की ही जिम्मेदारी बनती है।

NDA कार्यकाल में योजनाओं की सूची तो बहुत लम्बी है, किन्तु योजनाओं से देश की जनता को होने वाले लाभ का सूचकांक काफी गिरा हुआ है। लेकिन योजनाओं की यह फेहरिस्त आपकी सुविधा के लिए रख रहा हूँ यदि आप भी किसी योजना का लाभ लेने के लिए अपना मुकदर आजमाना चाहें तो आजमा सकते हैं।

मगर सबसे पहले यह बताने की कृपा करें की आप जिन सरकारी शौचालयों में जाते हैं उसमें पानी का भी माकूल प्रबंध है की नहीं, अगर हाँ तो यह भी सरकार की बड़ी उपलब्धी में आप गिना सकते हैं। हालाँकि सरकार तो पूरी सुविधाओं का दावा करती रही हैं। योजनाओं की सूची Description में दाल दूंगा वहां देख सकते हैं।

शुक्रिया.



# Cross- integration and coordinated systems to enable the differently abled

**Author of the article- Mr. Prashant Agarwal, President of Narayan Seva Sansthan. NSS is a non-profit organization serving differently abled and underprivileged individuals.**

Social inclusion for both differently abled and the generic population has been imbibed, however, what is more striking is the inability of differently abled, especially women not able to seek the same opportunities and health access. This is majorly faced in the rural parts of India where the minimum health requirement is unfulfilled as compared to the situation in Urban parts of India. 15% of the world's population suffers from disability. 190 million (3.8%) people aged 15 years and older have significant complications, often requiring health services. What is even more complicated is the new disabilities rising and chronic health conditions in the ageing population. This was further more complicated with COVID-19 where isolation protocols raised serious cases of mental health challenges amongst the differently abled.

As per the census 2011, among the female disabled persons, 55% are illiterate. This number rose amidst COVID-19 where the number of female dropouts increased as most families could not sustain education due to unemployment. Central Government on the other hand was trying its best with



campaigns such as Beti Bachao, Beti Padhao that encouraged the education of the girl child. The Government must look at various aspects from the point of view of encouraging and empowering females who are differently abled or girls with a certain percentage of disability. Differently abled yet abled: Skilling girls through vocational programs and integrated AI subjects which are the thing of the future. Carpet making and designing or even Jewellery designing through organic products is a great option for girls with disabilities to take up. Large Corporation and Organisations or even NGOs can come forward to fund such projects that would help the differently abled women and give them a sense of hope

Education opportunities in the health sector: Nursing roles are the

best roles which can be offered to those who are differently abled. Support staff in hospitals amidst the COVID-19 crisis was needed the most. Differently abled women with leg disabilities can be offered training and can look for opportunities in health management, Admin or even Nursing staff in hospitals

Mental health counsellors: Most of the mental health challenges were faced by people with disabilities during COVID-19 period. Coping up was a task for a few but for those who had always wanted to pursue something in medicine and were unable to, they can obviously try a hand at Psychology and stress counselling. This would also mean more and more institutions must have programs in relation to stress management and mental health.

Health sector education opportunities for differently abled women- Major concern start for differently abled women's education in India is inaccessibility and unfriendly books.

Many women never pursued or tried to study in medicine due to not having proper facilities at their local level. Also, social protection for them at ground level seems zero for them that is why their social inclusion from

the planning stage is missing which is crucial part of the need in the today's world.

Learnings from covid-19- People witnessed real issue when they realised that health infrastructure was unable to serve the peoples need in the pandemic.

Weak medical services were hampering hard in the rural part of India. At the same time, differently abled women were expecting their babies in the COVID-panic world. Central government has announced multiple plan of action for the safety of pregnant women. But still at large, problem was not resolved.

All in all differently abled individuals especially women must create a consortium through social communities to come together and create opportunities for those who seek them. This can be funded by institutions and large corporates. Also, Narayan Seva Sansthan is running school for orphan and poor children's in the Udaipur, rajasthan with no fees for bringing them into mainlines.

Author of the article- Mr. Prashant Agarwal, President of Narayan Seva Sansthan. NSS is a non-profit organization serving differently abled and underprivileged individuals.

# Mission Export Conclave with 15 Countries

Report : Sunit Narula :

Chief Secretary of Haryana Sh Vijai Vardhan along with IG Law & Order, Chandigarh will inaugurate Promising Icon Awards 2021 & Mission Export Business Conclave tomorrow on 7th November 2021 at Taj Chandigarh.

The conclave and awards ceremony will be attended by Ambassadors of Fiji, Papua New Guinea, Union of

Comoros, Diplomats from Embassy of Egypt, Burkina Faso, Syria, Niger and Royal Advisor to Princess of Principato di Siborga.

The event will witness discussions and conference to discuss various trade and investment opportunities in the state of Haryana & Punjab and promotion of such opportunities and export products from these states globally.

Honble Minister of State for external affairs & Culture

Smt Meenakshi Lekhi has given blessings and congratulated Global Trade & Technology Council of India (GTTCI) through video byte for the promotion of traditional Indian culture in this global conclave with participation of over 15 countries as it is also a step towards achieving Honble Prime Minister Sh Narendra Modi's Mission Export of \$400 Billion export target.

A galaxy of high level bureaucrats, industry leaders

like Dr Sandeep Marwah (Media Tycoon), Dr Aruna Abhey Oswal, Dr Pawan Kansal (Jagdamba Cutlery Ltd), Dr Vinod K Verma (Aditya Birla Group), Navratan Aggarwal (Bikanervala), Lion PID VK Luthra, Diabetologist from CDAS Dr T Rajdev Patro, Dr Parmeet Singh Chadha (WSCC).

The promising icon recipient of 2021 are MCD Councillor Gunjan Gupta, Dr VP Tandon, Dr Gaurav Goyal,

Dr Anil Yadav, Dr T Rajdev Patro, Dr Indrajit Ghosh (MSMECCII), Dr Sanhit Jain, Lakshya Chhabaria, Manmeet Singh, Rajiv Tuli, Prof Gurdeep Arora, Arushi Nishank, Bobby Singh, Mr Sudhir Kumar, Mr Manoj Garg, Ms Chhavi Minhas, Ms Amrita kaur.

**Gift Partners:**

Shri & Sam, Da Milano, Gem Mines, Nemko Green tea, Global Gadgets, Moksh promotions.

-ITN

## NOTICE:

Times of Pedia does not guarantee, directly or indirectly, the quality or efficacy of any product or services described in the advertisements or other material which is commercial in nature in this Newspaper. Furthermore, Times of Pedia assumes no responsibility for the consequences attributable to inaccuracies or errors in the printing of any published material from the news agencies or articles contributed by readers. It is not necessary to agree with the views published in this Newspaper. All disputes to be settled in Delhi Courts only.

# Congress has always betrayed Sikhs in the name of justice for 1984 riots: Lekhi

New Delhi, 6 November. The minister of state for external affairs Smt Meenakshi Lekhi has said none can ever forget 1984 Sikhs carnage. It's still alive in our hearts even after 37 years, she said. Such a carnage that defamed the country is a black chapter in our history. Referring to 1984 riots she said we should be beware of those trying to divide us for ruling.

Smt Lekhi said during Congress rule Sikhs have always been cheated. They were given false assurance in the name of SIT and Sikhs had to wait longer for justice till Narendra Modi government came, set up the SIT, probe began and those guilty started getting punished.

She said after 84 riots even those who were Gandhians started leaving Congress. Not only this, Congress only pretended of setting up 4 commissions, nine committees and two SITs because despite all this, accused never got punished.

The minister said in 2015 when Modi government set up SIT and had the case reopened then only culprits started getting punished. Smt Lekhi said 1984 riots can never be forgotten nor forgiven.

The national spokesperson of BJP Sardar R P Singh said it has been 37 years since Sikhs have been fighting for justice. It was only under the leadership

of Shri Modi that people like Sajjan Kumar went to jail. He said it's going to be a long fight but we will continue to fight till we ensured all those accused who are still out sent to jails. He said Shri Modi is the only ray of hope who can get us justice

State vice President Shri Rajeev Babbar accused Kejriwal of dividing people in the name of caste and religion and added Delhiites have understood this. He said therefore people here are no longer going to be befooled by him. The Sikh cell incharge Sardar Gurmeet Singh and convenor Sardar Kulvinder Singh were present on the occasion.

-Press Release



# कांग्रेस का स्वतंत्रता संग्राम और मौलवियों की भूमिका

एक वक्त ऐसा भी आया जब कांग्रेस में RSS की Entry होने लगी और मुसलमानों को आहिस्ता आहिस्ता किनारे किया गया

Special Correspondent

जमशेदपुर:

मानगो : दिनांक 7/11/2021: एक दौर था जब मौलाना अबुल कलाम आजाद, मौलाना हसरत मोहनी, मौलाना फज्लुर्रहमान, हाफिज मुहम्मद इब्राहीम जैसे लोग देश की आजादी के लिए कांग्रेस को मजबूत कर रहे थे और अंततः, देश को आजाद कराने में कांग्रेस के साथ देश के मुसलमानों का बड़ा तबका साथ रहा जिनमें उलमा की तादाद भी खासी रही. जमीअत उलेमा पूरी कांग्रेस के साथ रही, 70 हजार मौलवियों ने अपनी जान की बाजी मुल्क की आजादी के लिए लगाई यह अलग बात है के हिन्द के मुस्लिम काँग्रेसी नेताओं को फरामोश किया गया.

और एक वक्त ऐसा भी आया जब कांग्रेस में टै की मजदतल होने लगी और मुसलमानों को आहिस्ता आहिस्ता किनारे किया गया.लेकिन मुसलमान उसके बावजूद कांग्रेस का Blind Supporter रहा. मगर सच्चाई यह है की कांग्रेस ने मुस्लमान और दलित तथा OBC और आदिवासी को अपना वोटर ही समझा उनके अधिकारों से वंचित रखा बल्कि कांग्रेस पर इस बात का भी इलजाम है की उसने भारत के मुसलमानों को दलितों से भी पिछड़ा बनाने में बड़ा रोल अदा किया, और फिर खुद सच्चर कमीटी रिपोर्ट तैयार कराई ताकि मुसलमानों को उनकी कमजोरी का एकसास दिलाकर एक बार फिर उन्हें गुलाम रखा जा सके. इसके बाद



कांग्रेस का नतीजा आपके सामने है की उसको न सिर्फ केंद्र बल्कि राज्यों से भी सत्ता से बेदखल होना पड़ा.

लेकिन आज एक बार फिर कांग्रेस को मुसलमानों का साथ मिलता दिखाई दे रहा है बल्कि देश का मुसलमान मुर्दा कांग्रेस को जिंदा करने की जुगत में अपनी कुर्बानियां भी दे रहा है उन्ही में से एक नाम झारखण्ड के टाटा जमशेदपुर के जिला पूर्वी सिंहभूम के निवासी मौलाना अंसार खान का है जो लगातार एक दशक से अपने जिले में कांग्रेस को मजबूत करने के लिए प्रयत्नशील हैं, और ये भी कहीं न कहीं मौलवी बरादरी से ही ताल्लुक रखते हैं यानी आज फिर कांग्रेस और देश को मजबूत बनाने में मौलवियों का किरदार सामने आ रहा है. पूर्वी सिंहभूम जिला कांग्रेस कमेटी के आह्वान पर जिला

उपाध्यक्ष सह पश्चिम विधानसभा विधायक प्रतिनिधि मौलाना अंसार खान ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी, कांग्रेस नेता राहुल गांधी, महामंत्री के सी वेणुगोपाल, प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर, माननीय स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता एवं जिला अध्यक्ष विजय खा के निर्देशानुसार कांग्रेस पार्टी का बूथ वार सदस्ता अभियान मानगो क्षेत्र में मौलाना अंसार खान के द्वारा घर-घर चलाया गया.

लोगों से कांग्रेस पार्टी का सदस्य बनने और देश को लोकतंत्र की बहाली, एकता अखंडता और सद्भाव के लिए अनुरोध किया गया, जाहिर है एकता ही सफलता और विकास की कुंजी है. जिसको BJP काल में तबाह करने का काम किया गया है. मौलाना अंसार और जिला कांग्रेस की

आह्वान पर लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हुए सदस्यता फार्म भरे एवं शपथ पत्र पर हस्ताक्षर भी किये. जिला कांग्रेस कमेटी के द्वारा उन्हें सदस्यता रसीद भी प्रदान किया गया. इस दौरान जिला उपाध्यक्ष मौलाना अंसार खान ने बताया कि यह सदस्यता अभियान बुधवार से चलाया जा रहा है साथ ही सदस्य बनने वाले व्यक्ति से सदस्यता शुल्क ₹5 भी जमा किया जा रहा है, इस पूरे कार्यक्रम में लोगों में काफी उत्साह देखा जा रहा है, सदस्यता अभियान चलाने के क्रम में लोगों ने कहा कि कांग्रेस पार्टी को हर माह सदस्यता अभियान चलाना चाहिए, हम लोग सदस्य बनने के लिए बहुत दिनों से इंतजार कर रहे थे.

इस अवसर पर जिला पूर्वी सिंहभूम के संगठन के साथ श्रीमती सोनिया गांधी, राहुल गांधी प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर, मंत्री बन्ना गुप्ता एवं जिलाध्यक्ष बिजय खों के प्रयास की जनता ने सराहना की, और भविष्य में कांग्रेस के हाथ को मजबूत करने का संकल्प लिया और साथ ही देश की जनता के साथ इन्साफ और अधिकारों के दिलाने के लिए कांग्रेस से आश्वासन भी लिया.मौलाना अंसार ने सदस्यता अभियान में हिस्सा लेने वाले सभी पदाधिकारियों, संगठन कर्मचारियों और साथियों का आभार व्यक्त किया.

पूर्वी सिंहभूम जिला कांग्रेस कमेटी एवं पश्चिम विधानसभा विधायक प्रतिनिधि कार्यालय.

## विधानसभा चुनाव को देखते हुए सीएम के दौरे हुए तेज

जैसे विधानसभा चुनाव नजदीक आ रहे हैं, वैसे वैसे सीएम के दौरे पर भी तेजी आ रही है. सोमवार को सीएम शामली से कैराना पहुंचे. यहां पर उन्होंने लोगों को चुनावी मौसम में कई करोड़ की परियोजनाओं की सौगात दी.जिसमें पीएसी कैंप और रोडवेज बस स्टैंड जैसी परियोजनाएं शामिल हैं. इसके बाद सीएम कैराना से पलायन करने वाले व्यापारी परिवारों से भी मिले. उन्होंने कहा कि मैं आपको लोगों को भरोसा दिलाने आया हूं कि अब डरने की जरूरत नहीं है. अगर कोई अपराधी हिमाकत करता है तो उसे सीधे परलोक भेज देंगे. इस दौरान उन्होंने एक बच्ची से कहा कि डरना मत. मैं हूं ना.

उन्होंने कहा कि कैराना हमारे लिए राजनीति का मुद्दा नहीं है बल्कि अस्मिता का मुद्दा है. ये हमारे लिए आन बान शान का मुद्दा है. उन्होंने पिछली सरकारों में अपराधियों के साथ मेहमानों जैसा व्यवहार होता था. दंगाइयों को हेलीकाप्टर से बुलाकर मेहमानवाजी करवाई जाती थी लेकिन ये योगी की सरकार है. इसमें अगर कोई दंगा फैलाएगा तो वह परलोक जाएगा. हम सभी को सुरक्षा की गारंटी देते हैं. इसलिए यहां पीएसी बटालियन की



स्थापित की जा रही है। कई अन्य परियोजनाओं से यहां का विकास होगा. कैराना को शास्त्रीय संगीत और उग्र के प्रमुख व्यापारिक केंद्र की पहचान वापस दिलाएंगे।।

सीएम ने 426 करोड़ की 114 परियोजनाओं का शिलान्यास व लोकार्पण किया। उन्होंने लाभार्थियों को डेमो चेक, पोषण किट, आवास की चाबी, स्वीकृति पत्र भी भेंट किए. उन्होंने कहा कि साल 2017 में भी मैं शामली आया था। तब मैंने

लोगों को विश्वास दिलाया था कि यहां सुरक्षा का बेहतर माहौल देंगे और आज हम कैराना को सुरक्षित माहौल देने में सफल हुए हैं।

सीएम ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि मुजफ्फर नगर में जब दो निर्दोष नौजवान मारे जाते हैं. तब लोगों को जाति नजर नहीं आती. जब निर्दोष हिंदुओं के घर जलाए जा रहे थे तब जाति की राजनीति करने वालों को जाति नजर नहीं आ रही थी. उन्होंने कहा बाबू हुकुम सिंह

हमारे बीच नहीं है. उनके खिलाफ झूठे मुकदमे दर्ज होते थे और प्रताड़ित किया जाता था. उन्होंने कहा कि कुछ लोग तालिबानी मानसिकता को बढ़ावा देने में खुशी महसूस करते हैं. ऐसे लोगों के कृत्य को कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा जबकि मारीच और सुबाहु की तरह ही दुर्गति का शिकार होना पड़ेगा.

उन्होंने कहा पीएम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आयुष्मान भारत के तहत पांच लाख तक का स्वास्थ्य बीमा दिया है, ताकि गरीब का इलाज भी संभव हो सके। कहा कि 2017 से पहले शामली के लोग इलाज के लिए दिल्ली जाते थे। लेकिन भाजपा सरकार आने के बाद अब लोग इलाज के लिए दिल्ली से शामली आने लगे हैं।

पीएसी बटालियन 250 करोड़ की लागत से बनेगी. जिसमें 1278 जवान रहेंगे.सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कैराना में अपराधियों का पहले जलवा था। अपराधियों की वजह से व्यापारी दूसरे प्रदेशों में पलायन कर गए थे। जनता की आवाज उठाने वाले जनप्रतिनिधियों पर झूठे मुकदमे दर्ज किए जाते थे। मोदी जी के आह्वान पर जनता ने प्रदेश में लोगों ने भाजपा की सरकार बनवाई।



## -:: संक्षिप्त समाचार ::-

### ज्वेलर्स शॉप में दिनदहाड़े चोरी से हड़कंप



मुजफ्फरनगर: शहर कोतवाली के भगत सिंह रोड पर रामकुमार ज्वेलर्स शॉप में दिनदहाड़े चोरी से हड़कंप मच गया। शॉप में चौन खरीदने के लिए आए शातिर चोर ने 70 लाख की 40 सोने की चौन पर हाथ साफ कर दिया और लाखों की 40 चौन लेकर चोर शॉप से रफूचक्कर हो गया। चोरी की बड़ी वारदात दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस शॉप पर चोरी की वारदात की जांच में जुट गई।



### किसान आंदोलन में 600 लोग शहीद, कुतिया भी मरती है तो... मोदी सरकार पर फिर बरसे सत्यपाल मलिक

मेघायाल के गवर्नर सत्यपाल मलिक ने किसान आंदोलन को लेकर एक बार फिर मोदी सरकार पर निशाना साधा है। हाल के समय में कई बार किसानों के मुद्दे पर सरकार और बीजेपी की लाइन से हटकर बोल चुके मलिक ने साफ कहा कि वह दिल्ली के उन 2-3 लोगों की इच्छा के खिलाफ बोल रहे हैं, जिन्होंने उन्हें गवर्नर बनाया है और जब कहेंगे तो वह तुरंत पद से हट जाएंगे। मलिक ने कहा कि किसान आंदोलन में 600 लोग शहीद हो गए तो लोकसभा में प्रस्ताव पास नहीं किया गया, जबकि कुतिया भी मरती है तो दिल्ली के नेता शोक संदेश जारी करते हैं!!



### रामपुर सीट पर इस बार किसका होगा कब्जा



रामपुर सीट पर सपा प्रत्याशी आजम खां का वर्चस्व रहा है। वे यहां से 9 बार विधायक रह चुके हैं। क्या इसबार के इस अभेद्य किला पर कब्जा कर पायेगी? जीत हासिल करने के लिए सभी राजनीतिक पार्टियां और नेता विभिन्न स्थलों पर रैलियां और जनसभाएं आयोजित कर रहे हैं।

रामपुर विधानसभा सीट पर समाजवादी पार्टी के संस्थापक सदस्य आजम खां का वर्चस्व रहा है। वे यहां से 9 बार विधायक रह चुके हैं। वर्ष 2019 में हुए उपचुनाव में आजम खां की पत्नी डॉ. तंजीम फात्मा ने भाजपा के प्रत्याशी को पराजित कर जीत दर्ज की थी। वर्ष 2002 से लगातार सपा के प्रत्याशी आजम खां के कब्जे में रहने वाली रामपुर विधान सभा सीट जीत हासिल कर पायेगी? ज्योतिष यानि अनुमान लगाया जा रहा है कि अगर पार्टियां अपने प्रत्याशियों के चयन के समय उनकी राशियों पर विचार करें और उसके अनुसार टिकट का आवंटन करें, तो उन्हें इसका लाभ मिलेगा।

## यूनिसेफ ने अफगानिस्तान के हालात पर गंभीर चिंता जताई



इंटरनेशनल डेस्क: संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (यूनिसेफ) ने अपनी ताजा रिपोर्ट में अफगानिस्तान के हालात पर गंभीर चिंता जताई है। अफगानिस्तान में साल 2012 के पहले छह महीनों में लगातार हुई हिंसा के कारण कम से कम 460 बच्चे मारे गए। रिपोर्ट में चार लड़कियों और दो लड़कों सहित एक परिवार के नौ सदस्यों की हत्या का भी जिक्र किया गया है जो गुरुवार को हुए विस्फोट के दौरान मारे गए थे। इस विस्फोट में तीन अन्य बच्चे घायल भी हुए थे।

रिपोर्ट में कहा गया है कि चार दशकों के संघर्ष ने अफगानिस्तान में हजारों लोगों का जीवन प्रभावित किया है। नगरहार में संघर्ष के दौरान अपना पैर गंवाने वाले हिबतुल्लाह नाम के 6 साल

के लड़के ने कहा कि वह अब एक कृत्रिम पैर पर निर्भर है। यूनिसेफ के संचार प्रमुख सामंथा मोर्ट ने कहा, 'हम इस साल अब तक विस्फोटक उपकरणों से मारे गए बच्चों की संख्या के बारे में भी चिंतित हैं। एक भी बच्चे की मौत दिल दहला देने वाली है।'

यूनिसेफ के अनुसार, अफगान बच्चे सालों से गरीबी और कुपोषण से जूझ रहे हैं। नगरहार में रहने वाले थेरेपिस्ट मोहम्मद फहीम ने कहा कि हर दिन उनके पास लाए जाने वाले 15 में से 10 बच्चे ब्रेन फ्रीज से जूझ रहे होते हैं। उन्होंने स्थिति को बहुत खतरनाक बताया और ऐसी घटनाओं के लिए युद्ध को जिम्मेदार ठहराया।

—एजेंसी

## मुझे पता है, ये सफर कठिन है: मनीषा



बॉलीवुड ऐक्ट्रेस मनीषा कोइराला कैंसर सर्वाइवर हैं। नेशनल कैंसर अवेयरनेस डे (7 नवंबर) पर उन्होंने अपनी कुछ तस्वीरें शेयर की हैं। साथ ही कैंसर से लड़ रहे लोगों को हिम्मत दी है। मनीषा ने लिखा है कि उन्हें पता है कि यह सफर कठिन होता है लेकिन कैंसर पेशेंट्स उससे ज्यादा मजबूत हैं। मनीषा ने फोटोज शेयर किए हैं जिनमें वह हॉस्पिटल बेड पर हैं और ट्रीटमेंट के साइड इफेक्ट से उनके बाल जा चुके हैं।

मनीषा कोइराला ने इंस्टाग्राम पर लिखा है, नेशनल कैंसर अवेयरनेस डे पर मैं उन सभी को प्यार और सफलता की दुआ देती हूँ जो कैंसर ट्रीटमेंट के कठिन सफर से गुजर रहे हैं। मुझे पता है कि ये सफर कठिन है, लेकिन आप लोग उससे भी ज्यादा मजबूत हैं। जिन लोगों ने इसकी वजह से जान गवाई मैं उन सभी को आदर देना चाहती हूँ

और जिन्होंने इस पर जीत हासिल की उनके साथ सेलिब्रेट करना चाहती हूँ। हमें इस बीमारी के बारे में जागरूकता फैलाने की जरूरत है। जो भी कहानियां उम्मीदों से भरी हों उन्हें बार-बार सुनाया जाना चाहिए। अपने और दुनिया के प्रति दयालु बनिएं। मैं सबकी हेल्थ और अच्छे होने की कामना करती हूँ। शुक्रिया।

मनीषा कोइराला ओवरी कैंसर को मात दे चुकी हैं। उन्हें 2012 में कैंसर का पता चला था। 2015 में वह कैंसर-फ्री हो गई थीं। 3 साल उन्होंने कैंसर से जमकर संघर्ष किया और आखिरकार जीत हासिल की। उन्हें स्टेज 4 कैंसर था। मनीषा ने अपना इलाज न्यूयॉर्क में करवाया था। 2018 में मनीषा अपनी किताब भी लॉन्च कर चुकी हैं जिसका टाइटल है Healed: How Cancer Gave Me a New Life.



# भारतीय सेना ने चीन सीमा पर रडार से लैस करने की मांग की

नई दिल्ली: अधिकारियों ने कहा कि भारतीय सेना ने चीन सीमा पर खतरे का पता लगाने और प्रतिक्रिया के लिए आधुनिक निम्न स्तर के हल्के रडार से लैस करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि इलाके कम ऊंचाई पर उड़ने वाले दुश्मन के विमानों, हेलीकॉप्टरों और मानव रहित हवाई वाहनों (यूएवी) के लिए आसान प्रवेश प्रदान करते हैं।

रडार मेक इन इंडिया परियोजनाओं की एक नई सूची में शामिल है, जिसे सेना उद्योग के साथ साझेदारी में आगे बढ़ाने की योजना बना रही है। सेना प्रमुख जनरल मनोज मुकुंद नरवणे द्वारा सोमवार को जारी की गई सूची में निगरानी और सशस्त्र ड्रोन झुंड, काउंटर-ड्रोन सिस्टम, पैदल सेना हथियार प्रशिक्षण सिमुलेटर, रोबोटिक्स निगरानी प्लेटफॉर्म, पोर्टेबल हेलीपैड और विभिन्न प्रकार के गोला-बारूद शामिल हैं।

सेना एक 3डी सक्रिय इलेक्ट्रॉनिक रूप से स्कैन की गई सरणी रडार चाहती है, जिसमें वायु रक्षा हथियारों के सामरिक नियंत्रण के साथ 50 किमी की सीमा हो।



आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए, सरकार ने 209 रक्षा वस्तुओं की दो सूचियों को अधिसूचित किया है, जिन्हें आयात नहीं किया जा सकता है, जिन्हें 2021 से 2025 तक उत्तरोत्तर लागू किया जाएगा। स्स्ट उन हथियारों और प्रणालियों में से है, जिन्हें आयात नहीं किया जा सकता है।

चीन से लगी उत्तरी और पूर्वी सीमाओं के लिए रडार की जरूरत है, जिसकी सेना

ने दोनों सेक्टरों में सैन्य गतिविधियां तेज कर दी हैं। भारत और चीन लद्दाख में 18 महीने से अधिक समय से एक सीमा तनाव को झेल रहे हैं और इसे हल करने के लिए चल रही सैन्य वार्ता के परिणामस्वरूप कोई बड़ी सफलता नहीं मिली है।

रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (क्वै) ने हवाई लक्ष्यों का पता लगाने और उन्हें ट्रैक करने के लिए उच्च ऊंचाई वाले

मैदानों और पहाड़ों में जमीनी निगरानी के लिए अरलेशा एमके-1 नामक एक एलएलएलडब्ल्यूआर भी विकसित किया है।

अधिकारियों ने कहा कि भारतीय वायु सेना ने अश्लेषा रडार को शामिल कर लिया है, लेकिन सेना ने इसे ऑर्डर नहीं करने का फैसला किया, क्योंकि इसकी आवश्यकताएं अलग थीं। अधिकारियों ने कहा कि चीन सीमा पर एक महत्वपूर्ण भेद्यता को बंद करने के लिए एलएलएलडब्ल्यूआर की तत्काल आवश्यकता है।

सेना ने हवाई खतरों से निपटने के लिए हाल ही में उन्नत एल-70 एंटी-एयरक्राफ्ट गन, स्वीडिश हथियार फर्म बोफोर्स एबी द्वारा निर्मित एक हथियार को पूर्वी क्षेत्र में शामिल किया है। यह पहली बार है, जब उन्नत एल-70 तोप को ऊंचाई पर तैनात किया गया है। उन्नत एल-70 बंदूकें 3.5 किमी की सीमा में विमान, सशस्त्र हेलीकॉप्टर और यूएवी को मार गिराने में सक्षम हैं।

—एजेंसी

## भोपाल में कमला नेहरू अस्पताल के पीडियाट्रिक विभाग में आग लगने से 8 बच्चों की मौत

नई दिल्ली: भोपाल में दर्दनाक हादसा हुआ है। यहां कमला नेहरू अस्पताल के पीडियाट्रिक विभाग में आग लगने से 4 बच्चों की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि हादसे के वक्त एसएनसीयू में कुल 40 बच्चे भर्ती थे जिसमें से 36 बच्चों को दूसरे वार्ड में शिफ्ट किया गया। आग लगने के पीछे शॉर्ट सर्किट कारण बताया जा रहा है। मौके पर दमकल की 12 गाड़ियां की मदद से आग पर काबू पाया गया।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने घटना पर दुख जताते हुए मामले में हाईलेवल जांच के आदेश दिए हैं। इसकी जांच स्वास्थ्य और चिकित्सा विभाग के एसीएस मोहम्मद सुलेमान करेंगे। वहीं पूर्व



सीएम कमलनाथ ने इस घटना को बेहद दर्दनाक बताया है।

उधर, सूचना मिलते ही चिकित्सा शिक्षा मंत्री विश्वास सारंग भी अस्पताल में पहुंचे। घटनास्थल पर देर रात तक अफरा-तफरी का माहौल रहा। चिकित्सा शिक्षा मंत्री विश्वास सारंग ने बताया कि तीसरे फ्लोर के जिस वार्ड में आग लगी थी, वहां 40 बच्चे भर्ती थे, जिसमें से 4 बच्चों की मौत हो गई है। बाकी 36 बच्चों को बचाकर दूसरे वार्ड में शिफ्ट कर दिया है। उन्होंने बताया कि प्रत्येक मृतक के माता-पिता को मुआवजे के तौर पर 4-4 लाख रुपए अनुग्रह राशि दी जाएगी।

—एजेंसी

## क्या भारतीय कप्तान विराट कोहली अपने पद से हटेंगे???

नई दिल्ली: विराट कोहली ने सोमवार को नामीबिया के खिलाफ कप्तान के रूप में अपना आखिरी टी 20 आई खेला और पूर्व भारतीय क्रिकेटर वीरेंद्र सहवाग ने इस बात का जवाब दिया कि क्या उन्हें अन्य दो प्रारूपों — टेस्ट और एकदिवसीय मैचों में नेतृत्व की भूमिका जारी रखनी चाहिए। भारतीय टी20 के कप्तान के रूप में विराट कोहली का कार्यकाल सोमवार को समाप्त हो गया, जब टीम 2021 टी20 विश्व कप के सुपर 12 चरण में बाहर हो गई। कोहली ने टूर्नामेंट से पहले घोषणा की थी कि वह सबसे छोटे प्रारूप में भारतीय कप्तान के रूप में अपने पद से हटेंगे।

विश्व कप में भारत की शुरुआत के बाद कट्टर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान और न्यूजीलैंड से भारी हार के साथ अन्य दो प्रारूपों में भी कप्तान के रूप में कोहली के भविष्य को लेकर अटकलें लगाई जा रही हैं। हालांकि, पूर्व भारतीय क्रिकेटर वीरेंद्र सहवाग का मानना है कि 33 वर्षीय कप्तान के रूप में प्शानदार रहे हैं और उन्हें



एकदिवसीय और टेस्ट में नेतृत्व की भूमिका नहीं छोड़नी चाहिए।

सहवाग ने अपने आधिकारिक फेसबुक पेज पर एक प्रशंसक के सवाल पर प्रतिक्रिया व्यक्त की कि क्या कोहली को कप्तान के रूप में पूरी तरह से इस्तीफा दे देना चाहिए। उन्होंने कहा, यह विराट का फैसला है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि उन्हें बाकी दो प्रारूपों की कप्तानी छोड़नी चाहिए। अगर वह सिर्फ एक खिलाड़ी के

तौर पर खेलना चाहता है तो यह उसका फैसला है। मुझे लगता है कि उनकी कप्तानी में भारत अच्छा खेल रहा है और कप्तान के रूप में उनका रिकॉर्ड शानदार है।

पूर्व सलामी बल्लेबाज ने कहा, वह एक अच्छा खिलाड़ी है, एक आक्रामक कप्तान है और सामने से नेतृत्व करता है। मैं दोहराता हूं कि वनडे और टेस्ट में कप्तानी छोड़ना या न छोड़ना उनका निजी फैसला

होना चाहिए।

हालांकि, उन्होंने जोर देकर कहा कि आईसीसी टूर्नामेंटों में टीम के खराब प्रदर्शन पर आत्मनिरीक्षण करने की जरूरत है। महेंद्र सिंह धोनी की कप्तानी में 2013 चौपियंस ट्रॉफी की जीत के बाद से भारत को अभी तक आईसीसी खिताब नहीं मिला है।

सहवाग ने कहा, मुझे पता है कि हमें बुरे समय में टीम का समर्थन करना चाहिए, लेकिन एक लंबा समय हो गया है जब हमने कोई बड़ा आईसीसी टूर्नामेंट नहीं जीता है। भारत को निश्चित रूप से इस पर आत्मनिरीक्षण करना चाहिए। द्विपक्षीय सीरीज जीतना एक बात है, लेकिन लोग आपको तभी याद करते हैं जब आप लगातार विश्व टूर्नामेंट जीतते हैं।

टीम इंडिया 17 नवंबर को एक्शन में वापसी करेगी, जब टीम तीन मैचों की टी20ई सीरीज के खिलाफ वह न्यूजीलैंड से भिड़ेगी।



# Jai Bhim raises pertinent questions about the abandoned scheduled tribes of Tamil Nadu

*Though there are no separate political parties to take up the cause of STs, it is the Left parties that often lend their support. Dalit organisations too largely focus on caste issues*

*It has been exactly a year since the Sathankulam custodial deaths happened. The perpetrators are yet to be punished. The incident shook up our collective conscience. Though investigations are allegedly going on, it is uncertain when the family of Jeyaraj and Bennicks will get justice.*

By N Vinoth Kumar

While the incident will be etched in our memory for years to come, the Tamil film 'Jai Bhim' which was released on Amazon Prime on November 2, has thrown the spotlight on a similar incident that happened in 1993.

Manikandan plays the tribal Rajakannu with his wife (Lijomol Jose) and daughter in the film, 'Jai Bhim'

Based on the brutal lock-up death case of a tribal, the film does not flinch to lay down the bare facts as it happened many years ago. It tells the tale of how an innocent snake catcher, Rajakannu (admirably played by Manikandan) from the Irula tribe gets falsely implicated in a theft case and is hauled off to jail. After which, he goes missing – the police claim he has run off with the jewels and his distraught pregnant wife approaches a lawyer Chandru (Surya in top form sans melodrama), to find out what happens. Surya is portraying none other than the former Madras High Court judge K Chandru, who had taken up this case and fought it to the bitter end.

The other elements such as the court scenes which closely resemble real-life courts, the screenplay that acknowledges the contribution of CPM cadres, music and cinematography add weight to the film. It has clearly turned out to be one of the highly-acclaimed Tamil films of this year.

This story revolves around four Andai Kurumbar families, one of the caste groups under Scheduled Tribes living in Mudhanai village, Cuddalore district for over 20 years. Their major occupation was making baskets using bamboos and they also work as agricultural labourers. One day, about 40 sovereign of jewels are stolen in a house that had employed the Kurumbar. The house owner suspect Rajakannu of having stolen the jewels and based on the complaint, the Kammapuram station police take Rajakannu into custody.

He undergoes various third-degree police torture and dies in custody. To cover up the murder, the police cart his body in the dead of night to throw it by the wayside in neighbouring Trichy district and they claim that Rajakannu escaped from custody.

Rajakannu's wife Parvathi tries to get help from various sources and she approaches Communist leaders in the region as well. But they draw a blank and are unable to find Rajakannu. The police do not



respond properly to their pleas. Finally, they seek the help of justice Chandru, who was then a practising lawyer at Madras High Court.

Chandru filed a habeas corpus petition and it was the only habeas corpus that was heard for a long time in the history of the Madras High Court. In the interim order given in 1996, the Court while providing compensation to Parvathi, also ordered for a CBCID inquiry. After a 13 year legal battle, it was proved that this was a case of custodial death and the perpetrators, the police officials, were sentenced to 14 years rigorous imprisonment in 2006.

The tribal community portrayed in 'Jai Bhim' are shown as snake and rat catchers

The screenplay built on this case makes the timeline of the case very clear. In 1995, the AIADMK was in power. The film does not baulk at showing the brutal bloody torture the police inflict on people to force them to confess to a crime they did not commit.

Is there any appropriation?

The film's title 'Jai Bhim' is also a subject of discussion. The slogan is more popular among the Ambedkarites and Dalit circles, whereas the film shows the contribution of Communists.

It is interesting to note that in Tamil Nadu, there is a constant clash between Dalit activists and Communist cadres. While many Dalit movements alleged that Left parties are not involved in caste-related issues, the Communists on the other hand, often harp on the fact that in order to eradicate caste and stop caste atrocities, Dalits should fight it as a class struggle.

It is true Dalit movements focus largely on Scheduled Castes and they tend to leave out Scheduled Tribes. So, is it justified to use the title 'Jai Bhim'? It seems more like they are trying to steal the thunder from the Communists in the name of Ambedkar, who has become an icon of the Dalits.

However, Era Murugavel, an advocate and human rights activist believed that there is no enmity between the two. The perception of differences on caste issues between Dalit activists and the Communists have been built up by 'intellectuals' and NGOs funded by corporates.

"There is no such rupture between the two on the ground. The Communists have revolted against caste atrocities in districts like Thanjavur as early as the 1970s when the Dalit movements were nowhere on the scene. Also, they

accept Ambedkar and the Dalits too started acknowledging the contributions of Communists," he pointed out.

He also added that this is not the first time Dalit sloganeering figured in a film that talks about Communists' contribution. Well-known documentary filmmaker Anand Patwardhan too titled one of his documentaries as 'Jai Bhim Comrade (2011)', a film that talks about Kabir Kala Manch, a musical troupe that is seen as an intersection of Dalits and Left-wing activism.

In order to avoid such controversies, the director of the film TJ Gnanavel, has explained the meaning of 'Jai Bhim' as a Tamil translation of a Marathi poem. One of the lines goes like this: "Jai Bhim means a teardrop of thousands of people". To add that, even Chandru himself has titled one of his books as 'Ambedkar Oliyil Enadhu Theerppugal' (My judgements in the light of Ambedkar). He also said that it is Ambedkar's speeches and writings that helped him to understand the nature of a case while pronouncing judgements.

Why STs left out?

So, what is the reason behind the lack of strong leadership among Scheduled Tribes?

"Their numbers are small and they scattered all over. Most of them are uneducated and many don't even have community certificates. To bring them under one umbrella is difficult," said Govindhan, a Communist leader in Cuddalore, who was instrumental in taking up Rajakannu's case. He also made a vow that until they get justice in this case, he won't get married. When he took up the case he was 26 and he finally married at the age of 39, after the policemen were punished.

Though there are no separate political parties to take up the cause of STs, it is the Left parties that often lend their support. Cases such as the police atrocities on Vachathi, a tribal village in Dharmapuri district during the search for Veerappan in the early 90s, are some examples, Govindhan added.

Arguably, the film is the second most depressing film made in Tamil cinema after Kamal Hassan's 'Mahandhi'. But where Surya scores over Kamal is that this film also gives hope as the woman gets justice through the courts.

When asked about whether Govindhan had hope in our courts while taking up this case, he succinctly replied: "More than hope, we had the commitment".



# आप बुद्धिमान हैं या एक ज्ञानी मूर्ख?

एक वैज्ञानिक वर्षों तक बहुत विस्तृत शोध कर सकता है। वह अपने क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ भी हो सकता है। लेकिन, अगर, वह अपने दिमाग का सही उपयोग नहीं कर रहा है, तो उसके पास केवल ज्ञान के अंश ही रहेंगे। वह पूरी तस्वीर बनाने के लिए इन टुकड़ों को एक साथ फिट नहीं कर पाएगा। दूसरे शब्दों में, वह अपने सूचना प्रनाड़ी से सही निष्कर्ष निकालने में सक्षम नहीं होगा।

दूसरी ओर, एक बुद्धिमान वैज्ञानिक हमेशा चमत्कारी पहलुओं और जीवित और निर्जीव प्राणियों में एक निष्कर्ष डिजाइन का अनुभव करेगा। वह तुरंत सृष्टि के विवरण के पीछे एक निर्माता के हाथ को स्वीकार करने कामयाब होगा।

जो कोई भी अपने स्वार्थ से खुद को मुक्त करता है और ईश्वर द्वारा उसे दिए गए प्राकृतिक दानों की मदद से ज्ञान की तलाश करता है, वह बहुत आसानी से समझ सकता है कि ब्रह्मांड में हर चीज का एक निर्माता है, और यह निर्माता शक्ति में ऊंचा है और हर चीज पर अधिकार रखता है।

यह जागरूकता ज्ञान के माध्यम से प्राप्त की जाती हैरु वह ज्ञान जिसके साथ प्रत्येक व्यक्ति पैदा होता है, वह ज्ञान जो मनुष्य के स्वभाव में विरासत में मिलता है, वह ज्ञान जो पूरी तरह से बुद्धि या ज्ञान से अलग अवधारणा है। कोई व्यक्ति कितना



ब्रह्मांड और उसके भीतर रहने वाले प्राणियों का सही संतुलन और सामंजस्य, एक सर्वोच्च और सबसे शक्तिशाली भगवान के होने का संकेत है।

भी बुद्धिमान और जानकार क्यों न हो, वह नासमझ होगा यदि वह अपने अस्तित्व के तथ्यों और अपने आस-पास जो कुछ भी देखता है, उसके अस्तित्व को देखने या

समझने में असमर्थ है। हमारे चारों ओर सब कुछ परमेश्वर के स्पष्ट चिन्हों को धारण करता है।

ब्रह्मांड और उसके भीतर रहने वाले प्राणियों का सही संतुलन और सामंजस्य, एक सर्वोच्च और सबसे शक्तिशाली भगवान के होने का संकेत है। सबूत सादा, सरल और निर्विवाद है। हमारे पास यह स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है कि यह सब एक और केवल परमेश्वर का कार्य है।

और एक अपार सूर्य हमारे ग्रह से लाखों मील दूर है, जो हमें आवश्यक प्रकाश, ऊष्मा और ऊर्जा प्रदान करता है। सूर्य और पृथ्वी के बीच की दूरी इतनी सूक्ष्मता से समायोजित है कि ऊर्जा का यह स्रोत न तो हमें झुलसाता है और न ही हमें मौत के घाट उतारता है। जब हम आकाश को देखते हैं, तो हमें पता चलता है कि इसके सौंदर्य आकर्षण के अलावा, पृथ्वी के चारों ओर का वायु द्रव्यमान भी मनुष्य और सभी प्राणियों को संभावित बाहरी खतरों से बचाता है। यदि यह वातावरण न होता तो इस ग्रह पर एक भी जीव न होता।

लेकिन, अगर कोई इन साफ तथ्यों को अपनी आंखों के देखने के बाद भी इनकार करता है और ऐसा व्यवहार करता है जैसे कि वे मौजूद नहीं हैं, जो जानता है कि क्या सही है और फिर भी उसे स्वीकार नहीं करना चाहता है तो वह आदमी या तो मूर्ख है या पाखंडी है। और उसके पाखंड का कारण यह है कि यह तथ्य उसके व्यक्तिगत हितों के साथ संघर्ष करते हैं। ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकारने का अर्थ है एक ऐसी आकृति को स्वीकारना, जो हमसे बहुत श्रेष्ठ है, जिसकी हमें सख्त जरूरत है, जिसके लिए हम जवाबदेह हैं और जिसके आगे हमें झुकना चाहिए – इस्लाम का अर्थ यही है – सर्वोच्च ईश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण करना।

## SUBSCRIPTION FORM TIMES OF PEDIA

| Issue | Subscription Price | Years |
|-------|--------------------|-------|
| 52    | 250/-              | 1     |
| 104   | 500/-              | 2     |
| 260   | 1,300/-            | 5     |
| 520   | 2,600/-            | 10    |
| --    | 5,000/-            | Life  |

Name : .....  
Address : .....  
.....  
Email:.....  
Contact Phone No.....  
for donation ☐ /life ☐ /10 yrs ☐ /5 yrs ☐ subscription  
The sum of Rupees..... (Rs...../-)  
through cheque/DD No.....dt.....

Fill the above form neatly in capital letters and send it to us on the following address :  
Times of Pedia, K-2-A-001, Abul Fazal Enclave-I,  
Jamia Nagar, Okhla, New Delhi-110025  
or email : [timesofpedia@gmail.com](mailto:timesofpedia@gmail.com)

Also Send us your subscription, membership, donation amount in favour of Times of Pedia, New Delhi  
Punjab National Bank, Nanak Pura Branch,  
New Delhi-110021  
A/C No.1537002100017151, IFS Code : PUNB 0153700



*Ending  
Someone's  
thirst is  
the  
Biggest  
Deed of  
Humanity*

## ADVERTISEMENT TARIFF TIMES OF PEDIA

| Size/Insertion Single             | B&W (Rs) | 4 Colour (Rs) |
|-----------------------------------|----------|---------------|
| Full Page (23.5 x 36.5 cm)        | 30,000/- | 1,00,000/-    |
| A4 (18.7 x 26.5 cm)               | 20,000/- | 60,000/-      |
| Half Page (Tall-11.6 x 36.5 cm)   | 18,000/- | 50,000/-      |
| Half Page (wide-23.5 x 18 cm)     | 8,000/-  | 50,000/-      |
| Quarter Page (11.6 x 18 cm)       | 10,000/- | 28,000/-      |
| Visiting Card size (9.5 x 5.8 cm) | 3,000/-  | 10,000/-      |

### MECHANICAL DATA:

**Language:** English, Hindi and Urdu  
**Printing:** Front and Back - 4 Colours , Inside pages - B&W  
**No. of Pages:** 12 pages (more in future)  
**Price:** Rs. 3/-  
**Print order:** 25,000  
**Periodicity:** Weekly  
**Material details:** Positives/Format of your advertisements should reach us 10 days before printing.  
Note: 50% extra for back page, 100% extra for front page  
Please Add Rs. 10 for outstation cheques.  
50% advance of total add cost would be highly appreciable, in case of one year continue add. Publication cost will reduce 50% of actual cost.  
**Bank transactions details of TIMES OF PEDIA**  
Send your subscriptions/memberships/donations etc.  
(Cheques/DD) in favour of TIMES OF PEDIA New Delhi  
Punjab National Bank, Nanak Pura Branch , New Delhi-110021  
A/C No.1537002100017151, IFS Code : PUNB 0153700



# Tripura Violence: Hate and Communal Polarization

*Dr. Ram Puniyani*

The story of contemporary Indian society is mired by the regular outburst of violence against its religious minorities. As the Prime Minister is hugging Pope, back home the anti Christian violence is on the constant rise, though in low intensity endemic form. Muslims as a community have been the prominent victims with violence against them erupting at diverse places. The impact of communal violence on the social dynamics is constantly visible as the Muslim community is marginalized in ever increasing intensity. One expression of this is the section of them feeling alienated in increasing degree as exhibited by some of them bursting crackers when Pakistan wins an inconsequential cricket match, as witnessed recently. There is no dearth of communal ideologues across the border as one of the ministers from Pakistan foolishly declared it as victory of Islam and another one from that lobby, a cricketer declared the offering of Namaz in front of Hindu as another sign of superiority! Idiocy has no limits it seems.

And at around the same time Tripura witnessed communal violence. This violence was orchestrated on the pretext of the unfortunate and condemnable violence in Bangla Desh during Durga Puja. In Tripura currently BJP Government is ruling. Same Tripura was ruled by left party for decades and did not witness a single violence during that period. Tripura violence was precipitated after the rallies led by VHP, RSS, and other affiliated

organizations were in full flow. The slogans in these rallies were that true Hindus must unite and act now. They should unite above political and other differences.

These rallies provoked the discord by spreading the fear that Hindus are under threat. If the Muslims can torment Hindus across the border, just few kilometers across, what will stop them from attacking the Hindus here?

The slogans were that Hindus must be provided with arms for self defense in Bangla Desh. As the rallies and consequent violence was on; the state Government made the show of taking action but it let the violence, burning of the mosques and attack on property of Muslims, go on unabated. The result has been nearly 20 Hate crimes, attacks on around 15 mosques and total destruction of 3 mosques. And all this happened as the police force is claiming that all efforts were done to control the violence. Here one recalls Dr. Vibhuti Narain Rai's observation that no communal violence can go on beyond 48 hours, without the covert sanction from the state.

How rumors play a role in provoking the people is well known, now added on to 'word of mouth hate propagation', the social media has become another powerful tool in spreading the 'Hate for other community'. The key here lies in showing that the majority community is the victims of the minorities' excesses. The trick succeeds well as the grip of social media is an evil grip, escaping from whose clutches is not easy. The IT cell and its use of social media in an effective manner is a big key for those aiming political

games. These raise the emotive pitch and poorer sections of society, become the primary foot soldiers of the violence.

The other incidents of Hate are not too difficult to find, as 'hate Muslims-Christians' is being made the new normal in the social thinking. In Ahmadabad, in Anand, a road was being washed in front of a Hotel, as the Hotel has a Muslim partner.

Earlier the spectacular violence like 92-93 Mumbai, Gujarat 2002, Kandhamal 2008, and Muzzafarnagar 2013 were planned at a big scale. After 2014, such massive acts are not there barring the 2020 Delhi violence, which was organized to teach the community a lesson for the Shaheen Bagh movement, the biggest and very democratic movement in Independent India. The big acts of violence polarize the community instantly and the majority community flocks to the communal forces as the minorities are thrown into the ghettos.

State, ruled or dominated by communal forces (through infiltration into the state apparatus like in bureaucracy, police) remains quiet, and does not take the proper steps to bring a halt to the killings of innocents. One of the reasons may be that the ruling outfit may not be so much dependent on the votes of these minorities, whose drift away from them is overcompensated by the polarization of majority community to them as their imagined saviors.

There are great scholarly works on Indian communal violence. Dr. Asghar Ali Engineer showed that the communal violence has nothing to do with religion and religion is used

as a cover for political games. Paul Brass shows that there is a prevalence of 'Institutional riot mechanism', which is activated prior to elections for electoral benefits. Wilkinson gives the answer to another lemma as to why the state is not following the norms to control the violence and he points out that the victim of violence are those who are not its electoral base, on whom it does not depend for its electoral success.

Communal violence has constantly been changing its forms; its agenda is also dynamically changing. Now Tripura and earlier to this Assam we witnessed it as communalizations' deeper inroads into these areas. While the ruling party will claim that there are no major communal riots during its rule, the truth is now major communal violence is not needed to polarize the communities, as that goal has already been achieved to a great extent. Currently communal violence is like a maintenance dose of communalization process. We also can observe that after the acts of violence the communities come to newer equations of relationships. The minorities come to accept their subordinate place by ghettoisation and by accepting their lower status in the society.

It is in these circumstances that some disgruntled elements burst crackers to show their frustrations in the society in which they are slogging to survive. The bursting of crackers as an act of anti nationalism is extremely superficial way of looking at the phenomenon, worsening the communal divides rather than putting a soothing balm to the victimized community.

## Climate crisis cries for third commitment period of Kyoto Protocol and regulation of TNCs

*Gopal Krishna*

Some 24 members of the Like Minded Developing Countries (LMDC) and 55 countries of the African Group (AG) comprising 54%+17%=71 % of world population have been excluded from unjust 26th Conference of Parties (COP26) of United Nations Framework Convention on Climate Change (UNFCCC). This situation creates a compelling logic for adoption of the third commitment period under the Kyoto Protocol for post 2020 period because the 37 countries failed to comply with it with impunity.

The COP 26 negotiators suffers from poverty of imagination under the influence of corporations which have made nation states subservient to their naked lust for profit at any cost. These 37 countries played a notorious role in killing the Kyoto Protocol and replacing it with a non-binding treaty.

Let us recall how at COP 21 in Paris, on 12 December 2015, the Parties to the UNFCCC reached a voluntary agreement (Paris Agreement) to combat climate crisis. The Paris Agreement was framed pursuant to Washington Declaration that envisaged extinction of common but differentiated responsibilities (CBDR) principle. Developing countries were made to agree to undermining of CBDR principle using donor' influence over them.

The key polluters paid lip service instead of actions and investments needed for a sustainable low carbon future. The trend of insincerity continues to envelope COP26. The key polluters would like people to forget that they failed to meet the targets for the first commitment period of the Kyoto Protocol (2008-2012) that required them to reduce emissions of the six main greenhouse gases, namely, Carbon dioxide (CO<sub>2</sub>); Methane (CH<sub>4</sub>); Nitrous oxide (N<sub>2</sub>O);

Hydrofluorocarbons (HFCs); Perfluorocarbons (PFCs); and Sulphur hexafluoride (SF<sub>6</sub>).

Under the Protocol, limit was imposed on the maximum amount of emissions (measured as the equivalent in carbon dioxide) that a Party may emit over a commitment period in order to comply with its emissions target, country's assigned amount. The individual targets for 36 countries included in Annex B to the Kyoto Protocol for the first commitment period and their emissions targets included EU, US, Canada, Japan, Croatia, New Zealand, Russian Federation, Ukraine, Australia. US did not to ratify the Kyoto Protocol. In December 2011, Canada withdrew from the Kyoto Protocol effective from December 2012.

The Protocol had extended the 1992 UNFCCC that commits state parties to reduce greenhouse gas emissions, based on the scientific consensus that (part one) global

warming is occurring and (part two) that human-made CO<sub>2</sub> emissions are driving it. The Protocol was adopted in Kyoto, Japan, in December 1997. It had entered into force in February 2005.

As a consequence of the insincerity of the key polluters, the 36 countries global emissions increased by 32% from 1990 to 2010. Their insincerity became more pronounced during the second commitment period of the Kyoto Protocol (2013-2020). The 37 countries that had binding targets included Australia, the European Union (and its then 28 member states, now 27), Belarus, Iceland, Kazakhstan, Liechtenstein, Norway, Switzerland, and Ukraine. Belarus, Kazakhstan, and Ukraine did not put into legal force the targets under the second commitment period. Japan, New Zealand, and Russia did not take targets in the second commitment period.

**contd.. on next issue**



# मुकेश अंबानी के मुंबई स्थित आवास के बाहर लगी कड़ी सुरक्षा



नई दिल्ली: भारत के सबसे अमीर शख्स मुकेश अंबानी के मुंबई स्थित आवास के बाहर मंगलवार को सुरक्षा कड़ी कर दी गई है। समाचार एजेंसी पीटीआई के अनुसार, एक टैक्सी चालक ने पुलिस को सूचित किया कि बैग ले जा रहे दो संदिग्ध यात्रियों ने उससे एंटीलिया के स्थान के बारे में पूछा था। पुलिस अंबानी के आवास के बाहर और बैरिकेड्स लगा रही है और सीसीटीवी फुटेज भी खंगाल रही है।

पुलिस ने कहा कि मुकेश अंबानी की निजी सुरक्षा हर समय पुलिस के साथ समन्वय करती है। हालांकि, सूचना मिलने के बाद पुलिस ने दक्षिण मुंबई के विभिन्न हिस्सों में सुरक्षा कड़ी कर दी और बैरिकेड्स लगा दिए।

पुलिस अधिकारियों के अनुसार, टैक्सी चालक दक्षिण मुंबई में किल्ला कोर्ट के पास खड़ा था, तभी

एक कार ने टक्कर मार दी और उसमें सवार लोगों ने उससे अंबानी के आवास के स्थान के बारे में पूछा। अधिकारियों ने बताया कि कार में सवार दो यात्री उर्दू में बात कर रहे थे और अपने साथ दो बैग ले जा रहे थे।

इसके बाद चालक ने पुलिस को फोन कर घटना की जानकारी दी। आजाद मैदान पुलिस ने टैक्सी चालक का बयान दर्ज कर लिया है। पुलिस दावे की पुष्टि कर रही है और एक वरिष्ठ अधिकारी स्थिति पर नजर रखे हुए है।

इस साल फरवरी में एंटीलिया के बाहर विस्फोटकों से लदी एक एसयूवी मिली थी, जिससे दहशत फैल गई थी। राष्ट्रीय जांच एजेंसी एसयूवी घटना में मुंबई पुलिस के तत्कालीन सहायक पुलिस निरीक्षक (एपीआई) सचिन वाजे की कथित भूमिका की जांच कर रही है।

## चुनाव के चलते क्या यूपी के लोगों को मिल सकता सस्ती बिजली का तोहफा



यूपी के लोगों को सस्ती बिजली का तोहफा मिल सकता है। दरअसल, पंजाब, उत्तराखंड और यूपी समेत कई राज्यों में चुनाव होने वाले हैं। ऐसे में वोटर को लुभाने के लिए बिजली दरें कम करने की तैयारी की जा रही है। पंजाब और उत्तराखंड हाल ही में बिजली की दरों में कमी कर चुके हैं। जिसके बाद से योगी सरकार पर बिजली सस्ती करने का दबाव बढ़ गया है। यूपी में करीब 2 करोड़ घरेलू उपभोक्ता हैं।

उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत उपभोक्ता परिषद पहले ही रेट कम करने की मांग कर चुका है। दलील है कि बिजली कंपनियों के पास पहले से उपभोक्ताओं को हजारों करोड़ रुपए पड़े हैं। उसके आधार पर ही रेट कम किए जा सकते हैं। इसको लेकर उत्तर प्रदेश विद्युत नियामक आयोग में सितंबर में प्रत्यावेदन दाखिल किया गया था। 15 दिन में इसकी रिपोर्ट आनी थी। लेकिन दो महीने बीतने के बाद भी रिपोर्ट नहीं आई। बिजली कंपनियों ने अब तक कोई जवाब नहीं दिया।

परिषद का दावा है कि उपभोक्ताओं का करीब 20,596 करोड़ रुपए बिजली कंपनियों के पास पड़े हैं। उपभोक्ताओं ने रेग्युलेटरी सरचार्ज पहले 3.71 प्रतिशत और 4.28 प्रतिशत के हिसाब से भरा है। यही पैसा 20 हजार करोड़ रुपए हो रहा है। इसके एवज में ही बिजली दर कम होनी चाहिए।

उधर, विद्युत नियामक आयोग बिजली दरों में उपभोक्ता परिषद की याचिका पर रिपोर्ट मांगी है। लेकिन बिजली कंपनियां और सरकार दोनों चुप हैं। पंजाब सरकार ने 3 रुपए प्रति यूनिट की दर से रेट कम किया है। इसका फायदा वहां के घरेलू उपभोक्ताओं को मिलेगा। नई दर 1.19 रुपए प्रति यूनिट होगी। इसमें 7 किलोवॉट तक लोड वाले उपभोक्ता शामिल हैं।

वहां पहले 100 यूनिट तक 4.19 रुपए देने होते थे। अब 100 यूनिट तक खर्च करने पर 1.19 रुपए प्रति यूनिट ही देने होंगे। इसी तरह 300 यूनिट तक पहले प्रति यूनिट 7 रुपए देने होते थे। लेकिन अब 4 रुपए ही देने होंगे।

## कुवैत की सरकार ने अमीर शेख नवाफ अल-अहमद अल-जबर अल-सबाह को अपना इस्तीफा सौंपा



समाचार एजेंसी सिन्हुआ ने राज्य मीडिया रिपोर्ट के हवाले से बताया कि अमीर ने सोमवार को प्रधानमंत्री शेख सबा खालिद अल-हमद अल-सबा की अगुवानी की, जिन्होंने सरकार का इस्तीफा दे दिया। यह इस्तीफा एक संसदीय सत्र की पूर्व संध्या पर आया, जिसके एजेंडे में प्रधानमंत्री उनकी सरकार के कई सदस्यों के खिलाफ हस्तक्षेप शामिल है।

24 जनवरी को, अमीर ने शेख सबा खालिद अल-हमद अल-सबा को प्रधानमंत्री नियुक्त किया उन्हें सरकार बनाने का काम सौंपा था।

2 मार्च को, अमीर ने प्रधानमंत्री के तहत नई सरकार बनाने का एक फरमान जारी किया।

कुवैत लगातार कैबिनेट में फेरबदल का अनुभव करता रहा है।

—एजेंसी

## फडणवीस के मुखबिर कच्चे खिलाड़ी हैं



मलिक ने कहा, हम वहां किरायेदार हैं। वहां पर झोपड़पट्टी थी, सोसायटी भी थी, हमने सलीम पटेल से रजिस्ट्री कराई, हमने मालिक से ली और उसने पावर ऑफ अटॉर्नी से डील करने को कहा। उसी कंपाउंड में सरदार वली खान का आज भी घर है। 300 मीटर की प्रॉपर्टी पर सरदार ने नाम चढ़वा लिया, उसका पैसा देकर सरेंडर करवाया। पहले वहां एक बीयर बार था उसको भी ज्यादा पैसे देकर लिया। हम वहां किराएदार थे, जमानी मालिक ने हमको दी।

उन्होंने कहा, देवेन्द्र फडणवीस ने झूठ का आडंबर खड़ा कर प्रतिमा मलिन करने का काम किया है। 62 साल की उम्र में मेरे ऊपर कोई भी अंडरवर्ल्ड का आरोप नहीं लगा। कल सुबह 10 बजे मैं देवेन्द्र फडणवीस के ऊपर अंडरवर्ल्ड का हाइड्रोजन बम फोड़ूंगा।

मलिक ने कहा, एक माहौल खड़ा किया गया कि नवाब मलिक के बम ब्लास्ट के आरोपियों से संबंध हैं। आज एक जगह को लेकर आपने लोगों के सामने कुछ कागज रखे कि हमने 1.5 लाख फुट जमीन कौड़ी मोल माफिया के जरिए खरीदी। हमें लगता है कि आपके मुखबिर कच्चे खिलाड़ी हैं।



The Vice President, Shri M. Venkaiah Naidu during the Golden Jubilee celebrations of Visakha Sahiti, in Visakhapatnam on November 05, 2021.



The Minister of State for Science & Technology and Earth Sciences (I/C), Prime Minister's Office, Personnel, Public Grievances & Pensions, Atomic Energy and Space, Dr. Jitendra Singh addressing at an interactive meet of Agricultural Start-Ups and farmers, jointly organised by CSIR and SKUAST, at Srinagar on November 05, 2021.

The Union Minister for Finance and Corporate Affairs, Smt. Nirmala Sitharaman holding a review meeting on Capital Expenditure (Capex) for the Ministry of Petroleum and Natural Gas (PNG), in New Delhi on November 02, 2021.



The Chairman, CBIC, Shri M. Ajit Kumar and Members of the Board greeting the Union Minister for Finance and Corporate Affairs, Smt. Nirmala Sitharaman a very Happy Diwali on behalf of CBIC family, in New Delhi on November 03, 2021.



## 96 देशों ने भारत के कोविड टीका प्रमाण पत्र का अनुमोदन किया



केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉक्टर मनसुख मांडविया ने कहा है कि भारतीय कोविडरोधी टीकों और टीकाकरण को 96 देशों ने पारस्परिक सहमति के आधार पर स्वीकृति दी है। इन देशों में कोविशिल्ड की दोनों खुराक तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन से मान्यता प्राप्त

टीके लिए हुए भारतीयों को यात्रा की स्वीकृति दी जाएगी। इन देशों में कनाडा, अमेरिका, बांग्लादेश, पोलैंड, स्लोवेनिया, क्रोएशिया, बुल्गारिया, तुर्की, यूनान, फिनलैंड, एस्तोनिया, स्विटजरलैंड, स्वीडन, ऑस्ट्रिया, यूक्रेन, अजरबैजान, कजाखस्तान, रूस, जॉर्जिया, यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, जर्मनी, बेल्जियम, नीदरलैंड, स्पेन, कुवैत, संयुक्त अरब अमरात, श्रीलंका, मॉरिशस, ईरान, लेबनान, फिलिस्तीन, सीरिया, मिस्र, ऑस्ट्रेलिया, मंगोलिया और फिलिपींस शामिल हैं।

श्री मांडविया ने कहा कि इस कदम से भारतीयों को अंतर्राष्ट्रीय यात्रा करने में सुविधा होगी।

**TALENT ZONE**  
ACADEMY for NEET / IIT-JEE

Run & Managed by the Alumni of IIT, AIIMS & IISc

The Faculties of Talent Zone Academy

Top Ranks Produced by Our Faculties in Past Years

IIT-JEE AIR 6<sup>th</sup>, 25<sup>th</sup>, 30<sup>th</sup>, 41<sup>st</sup> ..

AIIMS/NEET AIR 1<sup>st</sup>, 2<sup>nd</sup>, 16<sup>th</sup>, 46<sup>th</sup> ..

www.talentzoneacademy.com

+91-8929050030, 8929050031, 8929050032

E-58/2, Jasola, Jasola Shaheen Bagh Metro Station, N.D. - 110025

**TALENT ZONE**  
ACADEMY for NEET / IIT-JEE

NEET & IIT-JEE RESULT 2021

NEET 579 Malik Maaz Ahmad

NEET 569 Umar Farooq

NEET 608 Wali Ur Rahman

JEE (Mains) 96% Rehan Ansari

Contact Us  
8929050030  
8929050031  
8929050032

E-58/2, Jasola, Near Jasola Vihar, Shaheen Bagh Metro Station New Delhi-110025

سلسلہ جاری  
محمد زبیر شیخ نے ۱۰۰  
کتاب پیاری زبان اردو  
اقبال لائبریری گوتم  
پوری دہلی کو تحفہ  
پیش کیا اظہار تشکر  
مخلص حکیم اجملی  
آپ کا نمبر کب  
9350578519

السلام علیکم جناب آپ کو  
یہ جان کر خوشی ہوگی کہ  
علامہ اقبال میموریل  
لائبریری میں کتابوں کا آنے  
کا سلسلہ شروع ہو گیا آپ  
سے درخواست ہے کہ آپ  
بھی تعاون کرے میوات سے  
ڈاکٹر قمرالدین زاہر صاحب  
اور مسلم فنڈ نجیب آباد کے  
مینجر جناب اظفارالحق  
ذکی صاحب کا شکریہ  
9350578519

اے اینڈ ایس  
فارمیسی

ए एण्ड एस फ़ार्मेसी का सपना  
आयुर्वेदिक व यूनानी का फरोग

Magnet Pain Killer Oil, Suali, Aamalio, Aamalio Ds, A&S ENZYME Syrup, Rosheena, SKIN DS, A&S PHARMACY

Marketed by :  
**A & S PHARMACY**  
A-143, CHAUHAN BANGER, DELHI-110053  
E-mail : aspharmacydelhi2019@gmail.com  
9350578519

*Congratulations*

TO THE YOUNG AND TALENTED STUDENTS OF  
TALENT ZONE ACADEMY  
FOR ACHIEVING SUCH MARKS IN  
NEET & IIT.

*You all have proved that great things can be achieved through hard works and efforts I would also like to congratulate the faculty team of the Talent Zone Academy for their efforts and giving proper guidance to the students This result marks the first stroke of the beginning*

**Sana homoeopathy Aligarh**

**HOMEOPATHY  
MEDICINE  
FOR  
DIABETES**

9760291236



# सदा जवान बने रहने का दुख्खा



आजकल हर दूसरे व्यक्ति की यह शिकायत है कि कुछ भी काम करने के पश्चात वे थकान महसूस करने लगते हैं। इसके कई कारण हो सकते हैं, पौष्टिक आहार ना लेना, यदि भोजन करना भी तो समय से ना करना, व्यायाम या कसरत की कमी, पूरी नींद ना लेना, इत्यादि कई कारण मिलकर शरीर की ऊर्जा को नष्ट करते हैं। इसका एक कारण बढ़ता हुआ प्रदूषण भी बताया गया है, जो शरीर को विभिन्न रोग देकर कमजोर बना देता है। खैर कारण तो अनेक हैं लेकिन इसके इलाज के लिए हमें कोई ना कोई ऐसी दवा जरूर चाहिए जो असर भी करे और कोई साइड इफेक्ट भी ना दे।

अब ऐसी उम्मीद आज के चिकित्सकीय दुनिया

में फैली एलोपैथिक दवाओं से तो की नहीं जा सकती, किंतु आयुर्वेद में इसका हल जरूर है। आयुर्वेद में प्राकृतिक जड़ी-बूटियों के इस्तेमाल से ऐसे चूर्ण तैयार किए जाते हैं, जो कुछ ही दिनों में शरीर से थकान एवं कमजोरी जैसी बातों को छुमंतर कर देते हैं।

इसलिए आज हम आपको आयुर्वेद के ऐसे ही एक सदाबहार चूर्ण के बारे में बताने जा रहे हैं जो शरीर में चुस्ती भरकर उसे हमेशा जवान बनाए रहने में सक्षम है। इसे रोजाना लेने से थकान जैसी समस्या कभी नहीं आएगी।

इस चूर्ण को बनाने के लिए ध्यानपूर्वक पहले सामग्री नोट कर लें। जैसे सूखे आंवले का चूर्ण,

काले तिल का चूर्ण, भृंगराज का चूर्ण, गोखरू का चूर्ण।

इन सभी चूर्ण को 100-100 ग्राम ले लें, अब यह मिलकर 400 ग्राम हो गया। अब इस मिश्रण में 400 ग्राम ही मिश्री का पिसा हुआ पाउडर मिला लें। इसे मिलाते ही इसमें 100 ग्राम घी डाल दें और साथ ही 200 ग्राम शहद डालकर मिला लें।

अब जो चूर्ण तैयार हुआ है इसे किसी भी कांच के पात्र में डाल दें, यदि कांच का पात्र ना मिले तो चिकनी मिट्टी से बना हुआ बर्तन एक अच्छा विकल्प माना जाता है। कुछ घंटों के बाद यह चूर्ण ग्रहण करने के लिए तैयार हो जाता है।

इस चूर्ण का रोजाना एक चम्मच गाय के दूध के साथ ग्रहण करने से स्फूर्ति प्राप्त होती है। शरीर की कमजोरी, बार-बार शरीर का थक जाना, किसी काम में मन ना लगने जैसी समस्याएं कुछ ही दिनों में कम होती दिखाई देती हैं। इतना ही नहीं, यह चूर्ण और भी कई ऐसे फायदे देता है जो आश्चर्यजनक हैं।

यदि छोटी आयु में ही किसी के बाल झड़ना आरंभ हो जाए, तो यह चूर्ण अवश्य लें। बालों की ग्रोथ तो बनेगी ही, साथ ही बाल एक लंबी आयु तक काले भी रहेंगे।

इसके अलावा कमजोर एवं दुर्बल व्यक्ति को शारीरिक शक्ति एवं वजन प्राप्त करने में भी सहायक है यह चमत्कारी चूर्ण। यह चूर्ण जब भी सेवन करना आरंभ किया जाए, तब इसके साथ कुछ परहेज करने जरूरी हैं। जैसे कि अंडा, मांस मछली और नशीले पदार्थों का सेवन बंद करना होगा।

## घरेलू चीजों से करें छालों का इलाज



मुंह के छाले अक्सर किसी का जूठा खा लेने या पेट में गर्मी होने से होते हैं। मुंह के छालों को ठीक करने के लिए धनिया के दाने आयुर्वेदिक उपाय है। एक चम्मच धनिया के दानों को एक कप पानी में उबालें। पानी हटा दें और उसे ठंडा होने दें। फिर उसे मुंह में डाल कर थोड़ी देर चूसते रहें। ऐसा दिन में 2-3 बार करें। कुछ एसिडिक चीजें खा लेने से अगर छाले हुए हैं तो बेकिंग सोडा का इस्तेमाल करें।

ये जलन कम करता है और किटाणु मारता है। एक चम्मच बेकिंग सोडा को पानी में मिलाए और पेस्ट बना कर छालों पर लगा लें। इसे दिन में कई बार करें।

शहद छालों के दर्द से थोड़ा आराम देगा। इसमें माइक्रोब्स को भी मारने की क्षमता होती है। बस एक रुई में थोड़ा सा शहद डुबाएं और छालों पर लगाएं। महिलाओं को ज्यादा झेलना पड़ता है गर्दन दर्द।

एलोवेरा कमाल की औषधी है। ये तो शोद भी कहते हैं कि ऐलो वेरा मुंह की सेहत के लिए बहुत अच्छा है। छालों पर चाहें तो एलो वेरा जेल लगा लें या सीधे इसका जूस ही पी लें। मुंह के साथ त्वचा के लिए भी बहुत कारगर होता है।

ज्यादा मेहनत नहीं कर सकते तो बस अजमोदा की पत्ती ही चबा लें। बेहतर नतीजे के लिए पत्ती चबाने के बाद उसके रस को 10 मिनट तक छाले पर ही रखें। ये मुंह की दुर्गंध भी दूर करती है।

मल्टीपल मिसकैरेज का कारण गर्भ में स्टेम सेल्स की कमी

तुलसी की पत्ति भी फायदेमंद है। इसमें बैकटीरिया और फंगस मारने के गुण होते हैं। तुलसी की पत्ति चबाएं और तुरंत थोड़ा सा पानी पी लें। इसे सुबह शाम दोहराएं।

बर्फ दर्द को शांत करने में बहुत काम आती है। जैसे ही आपको लगे कि छाले होने वाले हैं, बर्फ को उस जगह रगड़ लें।

—आरोग्य संहिता